IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

डिस्लेक्षीया सभानता मापदंड

[1]Dr. ASHOKKUMAR PARMAR
[1]Assistant Professor
[1]Department of Hindi Edcuation Faculty of Education IASE Gujarat Vidyapith Ahmedabad

प्रस्तावना

विद्यालय में भिन्न-भिन्न छात्र शिक्षक के पास आते है। उनकी विभिन्न भिन्नता को ध्यान में रखकर दिये जानेवाली शिक्षा आज छात्र केन्द्री बन गयी है। छात्रों की अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया में कूछ कारक हकारात्मक प्रभाव डालते है और कूछ कारक नकारात्मक प्रभाव डालते है। ऐसे छात्रों की अध्ययन प्रक्रिया पर पडनेवाले प्रभाव हकारात्मक या नकारात्मक हो सकते है। छात्रों के वर्तन एवं अधिगम पर प्रभाव डालेनेवाले कारकों में छात्रों के रस, रूचि, अभिवृत्ति, बुद्धि, क्षमता, तार्कीक क्षमता और मानसिक क्षमता आदि हो सकते है। किन्तु कूछ मनोविकार ऐसे भी हो सकते है जिसके कारण छात्र स्वस्थ्य होने के बावजूद उनकी अधिगम प्रक्रिया पर नकारात्मक प्रभाव पडता है। ऐसे छात्र देखने में और आम वर्तन में अन्य छात्र से समान होते है, किन्तु वह एक सामान्य मनोविकार से पीडित होते है। ऐसी विकृति में हम देखते है कि वह पठन लेखन और कथन में छोटी-छोटी क्षतियाँ करते है। ऐसी क्षति को डिस्लेक्षीया (Dyslexia) कहा जाता है।

जो अक्षमता बच्चों की लेखन, पठन एवं गणन आदि बातों में अवरोध उत्पन्न करके बालकों की प्रगति में बाधा डालती है, उसे डिस्लेक्षीया कहा जाता है। इस समस्या से पीडित बालक को घर और विद्यालय की ओर से वांछनिय प्रोत्साहन न प्राप्त होने पर एवं लगातार असफलता के कारण ऐसे बालक निराशा की अनुभूति करते है। इस निराशा के कारण बालक विद्यालय का त्याग कर देते है। ऐसी समस्या न हो इस लिए बालकों के साथ जुडे सभी लोग- जैसे अभिभावक, शिक्षक एवं आचार्च को डिस्लेक्षीया की जानकारी होना आवश्यक है। जिस के संदर्भ में गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल द्वारा प्रकाशित कक्षा 12वीं के मनोविज्ञान के पाठ्यपुस्तक की इकाई 6 के लिए पृष्ठ क्रमांक 90 पर सीखने से संबंधित मनोविकृति के हिस्से में डिस्लेक्षीया विषय को समाविष्ट किया गया है। सच तो यह है कि बच्चों में सीखने से संबंधि यह समस्या प्राथमिक कक्षाओं में से ही दिखाई देती है। अतः डिस्लेक्षीया संबंधी सभानता प्राथमिक विद्यालय के आचार्यों में कितनी मात्रा में है? यह ज्ञात करने के लिए प्राथमिक विद्यालयों के आचार्यों में डिस्लेक्षीया सभानता संबंधित खोजकार्य के लिए एक सभानता मापदंड का निर्माण करने के लिए प्रस्तुत शोधकार्य किया गया है।

डिस्लेक्षीया का अर्थः

"डिस"(Dys) अर्थात बाधा या समस्या और (Lexia) अर्थात शब्द संबंधी। अर्थात डिस्लेक्षीया का अर्थ होता है शब्द समाधान संबंधी अक्षमता। यह अक्षमता बढती आयु के साथ सक्षम भी कर सकते है। इस समस्या से पीडित छात्र को केवल प्रेम, प्रेरणा और आत्मीयभाव के साथ बात करने पर उसकी इस क्षति में सुधार भी किया जा सकता है। छात्र की इस अक्षमता को दूर करने के लिए छात्र को योग्य मार्गदर्शन देने पर उस की इस क्षति को दूर करके वह छात्र सामान्य छात्र की तरह कार्य कर सकता है। डिस्लेक्षीया को एक न्युरोलोजीकल अवस्था माना जाता है, जिस में व्यक्ति की पढने और लिखने की भाषा क्षति को उजागर करता है। ऐसे तो डिस्लेक्षीया संबंधित संकल्पनाएँ

बहुत है, किन्तु "ध वल्ड **फेडरेशन ओफ न्युरोलोजी" ने डिस्लेक्षीया संबंधि अपनी परिभाषा में सूचित किया है कि, "प्रणालीगत जानकारी होने के बावजूद पढने की अध्ययन से संबंधित समस्या, अपर्याप्त समजशक्ति एवं अपर्याप्त विकास के मौकों के द्वारा डिस्लेक्षीया सटीक विकासलक्षी क्षति को स्पष्ट करता है"**

DSM-IV में डिस्लेक्षीया को शीखने की विकृतियों में समाविष्ट किया जाता है। DSM-V में उसका समावेश सीखने की क्रिया संबंधि विशिष्ट विकृति (Specific Learning Disorder) में किया जाता है। अमरिका के एक सर्वे के अनुसार वहाँ डिस्लेक्षीया बालको की मात्रा 17% और भारत में उसकी मात्रा 9.87% है। कन्याओं से ज्यादा कुमारों में यह विकृति दिखाई देती है। आयु के विभिन्न स्तर पर उसके भिन्न-भिन्न स्वरूप देखने को मिलते है। डिस्लेक्षीक बालकों में निम्नांकित सामान्य चिह्न दिखाई देते है। जैसे - (1) बाल्याकाल में कथन कौशल्य का अन्य बालकों की तुलना में कम विकास। (2) शब्दों के उच्चारण की अस्पष्टता। (3) नये शब्दों को शीखने के क्षेत्र में मंद गति। (4) शब्दों को समझने की अक्षमता। (5) समान उच्चारण वाले शब्दों के भेद पहचान ने में समस्या। (6) भाषा के लेखन कौशल की समस्या। (जैसे- "ठ" के बदले में "ढ" लिखना, "ट" की जगह पर "ड" लिखना, और उसके पठन के दौरान समस्या और "w,m,p,q,b,d" जैसे अंग्रेजी वर्णों के लेखन एवं पठन में समस्या। (7) एक ही शब्द को भिन्न-भिन्न वर्तनी में लिखना। जैसे- सीडी को सिडी, सीडि, सिडी आदि लिखना। (8) क्रियात्मक कार्यों में समस्या जैसे गैंद को कैच करने में, सुई में धागा पिरोने में, माला पिरोने में, बुट की दोरी बांधने में समस्या होना। (9) वाचन मे समस्या जिस से कक्षा में सबके सामने खडे होकर बोलने में लघुता। (10) शैक्षिक सिद्धि प्राप्त करने की प्रेरणा का अभाव।

उपरोक्त चिह्न वाले बच्चे डिस्लेक्षीक बच्चे कहे जाते है। "तारे झमी पर" फिल्म इसी का उदाहरण था। इस के अलावा थोमस आल्वा एडिसन, ज्योर्ज वोशिग्टन, आल्बर्ट आईनस्टाइन, लीयोनार्डो-द-विन्ची, बिल गेट्स आदि बाल्याकाल में डिस्लेक्षीया ग्रस्त थे।

आज देशभर के विभिन्न विद्यालयों में ऐसे अनेक छात्र कक्षा में शिक्षा प्राप्त करते है। अमीरखान की फिल्म "तारे जमीन पर" का गीत "खो न जाये तारे जमीन पर" इस विषय की ओर हमे अंगुली निर्देश करता है। **देश में ऐसे अनेक छात्र इस प्रकार के मनोविकार का सामना कर रहे है। जिस विकृति को जाननेवाला एक शिक्षक या आचार्य ही हो सकता है। ऐसे छात्रों की पहचान हो और विद्यालय के शिक्षा कार्य से जुडे सभी पहलूं में समाविष्ट मनुष्य जैसे अभिभावक, शिक्षक और आचार्य इस से सभान हो इस लिए प्रस्तुत शोधकार्य किया गया है। प्रस्तुत शोधकार्य प्राथमिक विद्यालयों के आचार्य के लिए डिस्लेक्षीया सभानता मापदंड के निर्माण के लिए किया गया है।**

पूर्व हुए शोधकार्य की समीक्षा से यह ज्ञात होता है कि जादव दिपीका (2012) के द्वारा कम्प्यूटर विषयक सभानता मापदंड बनाया गया था। ढाढोदरा(2018) के द्वार बी.एड्., के प्रशिक्षार्थियों के लिए धार्मिक सहिष्णुता मापदंड बनाया गया था। Ersanli & Mameghani (2016) के द्वारा इरानियन कॉलेज के छात्रों के लिए सहिष्णुता मापदंड बनाया गया था। Khalid & Mahmood (2013) के द्वारा उर्दू भाषा में 61 विधानों वाले सहिष्णुता मापदंड का निर्माण किया था। Dangi & Nagle (2016) द्वारा किशोरों के लिए 48 विधानों का धार्मिक विश्वास प्रणाली मापदंड का निर्माण किया था। Thomae; Birtel & Wittemann (2016) ने पारस्परिक सहिष्णुता मापदंड की रचना और वैधता निर्धारण किया था। राठोड एवं उपाध्याय (2019) के द्वारा जातीयता समानता सभानता मापदंड का निर्माण का कार्य चल रहा है। इस प्रकार इस से भी भिन्न-भिन्न विषय में सभानता मापदंड का निर्माण हुआ है। ये सब मापदंड उच्च शिक्षा के छात्रों के लिए है। यहाँ जिस मापदंड का निर्माण किया गया है वह प्राथमिक विद्यालय के आचार्यों के लिए है। यह मापदंड डिस्लेक्षीया से संबंधित आचार्यों की सभानता के लिए है। मेरे अध्ययन के दौरान ऐसा डिस्लेक्षीया संबंधित कोई मापदंड तैयार हुआ है ऐसा मेरे ध्यान में नहीं आया था अतः प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता ने गुजराती भाषा में डिस्लेक्षीया संबंधित सभानता मापदंड का निर्माण किया है। डिस्लेक्षीया संबंधित सभानता मापदंड के निर्माण में निम्नांकित सोपानों का अनुकरण किया है।

डिस्लेक्षीया सभानता मापदंड का निर्माणः-

शोधकर्ता ने डिस्लेक्षीया सभानता मापदंड के निर्माण के लिए विभिन्न उपकरण निर्माण पद्धति का अध्ययन करके योग्य समज प्राप्त करके मापदंड का निर्माण किया था। शोधकर्ता ने निम्नांकित सोपानों का अनुकरण करके डिस्लेक्षीया सभानता मापदंड का निर्माण किया था।

विधानों का आकलनः-

शोधकर्ता के द्वारा डिस्लेक्षीया से संबंधित विधानों के आकलन के लिए सामायिक, किताब- शोधपत्रों एवं फिल्मों का अध्ययन किया था। शोधकर्ता ने शिक्षक, बुजुर्ग व्यक्ति, विशेषज्ञों आदि के अभिप्राय भी मापदंड के निर्माण में प्राप्त किये थे। इसके अलावा शोधकर्ता ने प्राथमिक विद्लालय के आचार्यों के साथ चर्चा भी की थी। शोधकर्ता ने डिस्लेक्षीया संबंधि विभिन्न विभागों में से 110 विधानों का निर्माण किया।

विधानों का निर्माणः-

विधानों के आकलन के पश्चात विशेषज्ञों के सुझाव के अनुसार डिस्लेक्षीया से संबंधित विषय को योग्य न्याय प्राप्त हो ऐसे 11 घटकों को निर्धारित किये गये जिसमें शिक्षक, विद्यालय, अंग्रेजी विषय, गुजराती विषय, गणित विषय, बालक, प्रवक्ता, परिसंवाद, आलेख और सामायिक, डिस्लेक्षीया संबंधित शोधपत्र और सर्वेक्षण को घटक के रूप में समाविष्ट किया गया।

उपर्युक्त घटकों को ध्यान में रखकर स्पष्ट भाषा में विधानों का निर्माण किया था। विषेषज्ञों के सुझाव के आधार पर अनुचित विधानों को दूर करके अंत में 71 विधानों को मापदंड में समाविष्ट किया। इस 71 विधानों के आधार पर प्राथमिक स्वरूप के डिस्लेक्षीया सभानता मापदंड का निर्माण किया गया था।

प्राथमिक स्वरूप के मापदंड का निर्माण

प्राथमिक विद्यालयों के आचार्यों के लिए डिस्लेक्षीया सभानता मापदंड के निर्माण के लिए विशेषज्ञों के साथ विचार-विमर्श किया गया था। विशेषज्ञों से विचार-विमर्स के पश्चात उद्देश्य के अनुसार प्राथमिक स्वरूप के मापदंड का निर्माण किया गया था। प्राथमिक स्वरूप के सभानता मापदंड में कुल 11 डिस्लेक्षीया संबंधि विभाग रखे गये थे। जिसके विधान के सामने आचार्यों को “हा” एवं ”ना के खाके में ”सही” (√) का चिह्न करना था। प्राथमिक सभानता मापदंड में विभाग के अनुसार निर्मित विधानों की संख्या तालिका 1 में प्रस्तुत है।

तालिका 1

प्राथमिक स्वरूप के डिस्लेक्षीया सभानता मापदंड में विभाग अनुसार विधानों की संख्या

क्रम	विभाग का नाम	संख्या	क्रम	विभाग का नाम	संख्या
1	शिक्षक संबंधित	12	7	प्रवक्ता संबंधित	04
2	विद्यालय संबंधित	09	8	परिसंवाद संबंधित	03
3	अंग्रेजी विषय संबंधित	08	9	आलेख-सामायिक संबंधित	06
4	गुजराती विषय संबंधित	10	10	शोधपत्र संबंधित	03
5	गणित विषय संबंधित	04	11	सर्वेक्षण संबंधित	03
6	बालक संबंधित	09		कुल	71

उपर्युक्त तालिका 1 को दखने से ज्ञात होता है कि शोधकर्ता ने प्राथमिक स्वरूप के सभानता मापदंड में कुल 11 विभागों को समाविष्ट किया था। इस 11 विभागों में क्रमशः तालिका 1 के अनुसार विधानों का निर्माण किया था।

प्राथमिक स्वरूप के मापदंड के लिए विशेषज्ञों के सुझाव

प्राथमिक स्वरूप के मापदंड का निर्माण करके निर्मित मापदंड की जांच के लिए विशेषज्ञों को दिया गया था। ऐसे विशेषज्ञों में पीटीसी कॉलेज के व्याख्यता, बी.एड्. कॉलेज के प्राध्यापक, बाल मनोविज्ञान के ज्ञाता,

प्राथमिक विद्यालय एवं माध्यमिक विद्यालय के चयनित आचार्य एवं शिक्षक। विशेषज्ञों के द्वारा सूचित सुझावों में मापदंड में विधान जोडने का सुझाव, मापदंड में विधान रद्द करने का सुझाव, विधानों का स्वरूप एवं गठबंधन गलत होने से सुधार के सुझाव, विधानों के क्रम बदलने के सुझाव आदि सुझाव दिये गये। विशेषज्ञों के सभी सुझावों का अमल शोधकर्ता के द्वार किया गया।

द्वितीय स्वरूप के सभानता मापदंड में विशेषज्ञों के सुझाव आधारित विधानों में कूछ विधानों में सुधार किया गया। सुधार किये गये विधानों के क्रम और विधान है- (15) विद्यालय में विशेषज्ञों के डिस्लेक्षीया विषयक प्रवचन का आयोजन होता है।, (21) किसी छात्र को अंक याद रखने में समस्या होती है।, (36) आपने डिस्लेक्षीया विषयक जानकारी देते हुए किसी विशेषज्ञ को सुना है।, (39) शिक्षा के सामायिक में डिस्लेक्षीया विषयक लेख लिखने का आपने प्रयास किया है।, (43) आपने डिस्लेक्षीया संबंधित क्रियात्मक अनुसंधान करने का प्रयास किया है।

द्वितीय स्वरूप के सभानता मापदंड में विशेषज्ञों के सुझाव के अनुसार सूचित नये नये विधान जोडे गये। जो विधान क्रम एवं विधान है- (37) बच्चे गुजराती लेखन में क्षतियाँ करते है।, (19) बच्चे सरल गुजराती लेखन में क्षतियाँ करते है।, (20) बच्चे गलत हस्ताक्षर से लिखते है।, (22) बच्चे अंक बोलते है सहि किन्तु लिखते है गलत ऐसा होता है। और (24) बच्चे अंग्रेजी में ON को NO, buys को bisy और post-office को postoffice लिखते है।

प्राथमिक स्वरूप के मापदंड में सुधार एवं द्वितीय स्वरूप का मापदंड प्राथमिक स्वरूप के मपदंड में विशेषज्ञों के सुझाव के बाद अधिक लंबे एवं पुनरावर्तीत और अस्पष्ट विधानों को रद्द किया गया। विधानों की भाषा एवं वर्तनी संबंधि सुधार भी किये गये। शोधकर्ता ने सभी विधानों की जांच करके 33 विधानों को रद्द किया और 5 विधानों में सुधार किया और विशेषज्ञों के द्वारा सूचित 5 विधान नये जोडे थे। इस प्रकार 45 विधानवाले द्वितीय स्वरूप के मापदंड को तैयार किया गया था। जिस में प्रतिचार देने के लिए “हा” एवं “ना” का विकल्प रखा गया था।

शोधकर्ता ने पूर्वेक्षण के लिए 4 पृष्ठ का सभानता मापदंड तैयार किया था। जिस में प्रथम पृष्ठ पर शोधकार्य का विषय, सभानता मापदंड का शीर्षक, शोधकर्ता का नाम, शैक्षिक योग्यता, कॉलेज का नाम एवं सभानता मापदंड में किस प्रकार से प्रतिचार देना है, जिससे संबंधित सूचना एवं जानकारी पत्रक दिया गया था। प्रथम पृष्ठ पर प्रतिचार से संबंधित दो उदाहरण भी प्रस्तुत किये थे। दूसरे पृष्ठ पर आचार्यों की सामान्य जानकारी जैसे नाम, विद्यालय का नाम, आयु, जातीयता, शैक्षिक योग्यता, शैक्षिक अनुभव के कोष्टक रखे गये थे। सामान्य जानकारी के बाद चतुर्थ पृष्ठ पर 45 विधान एवं प्रत्येक विधान के सामने प्रतिचार देने के लिए “हा” एवं “ना” के विकल्प रखे गये थे। इस प्रकार द्वितीय स्वरूप के सभानता मापदंड का निर्माण किया था।

सभानता मापदंड के द्वितीय स्वरूप का पूर्वेक्षण

शोधकर्ता ने सभानता मापदंड के द्वितीय स्वरूप के मापदंड के पूर्वेक्षण के लिए सुरेन्द्रनगर जिल्ला शिक्षा समिति संचालित प्राथमिक विद्यालयों के 20 आचार्यों को न्यादर्श के रूप में चयन किया था। शोधकर्ता ने द्वितीय स्वरूप के सभानता मापदंड के पूर्वेक्षण के पश्चात अयोग्य एवं विषय की जांच न करनेवाले पाँच विधान रद्द किये थे। रद्द किये गये पाँच विधान एवं क्रम है - (7) ऐसी समस्या से पीडित बच्चों को कोई लेबल देते हो। (20) क्या छात्र गुजराती लेखन में क्षति करते है, जैसे - टमेटु को डमेटु, चकली को कचली, ठडिया को ढडिया, उपर को उफर आदि लिखते है। (23) क्या बच्चे विराम चिह्नों को अनदेखा करते है। (32) कूछ बच्चे दो रेखा के मध्य अच्छी तरह लिख नहीं सकते। (37) आप किसी डिस्लेक्षीया संबंधित परिसंवाद में गये है।

सभानता मापदंड का अंतिम स्वरूप

शोधकर्ता के द्वारा सर्वेक्षण पद्धति के द्वारा प्रथम स्वरूप के मापदंड का निर्माण किया गया था। प्रथम स्वरूप के मापदंड को विशेषज्ञों के सुझाव के आधार पर द्वितीय स्वरूप के मापदंड का निर्माण करके पूर्वेक्षण करके अंतिम

स्वरूप के मापदंड का निर्माण किया गया। सभानता मापदंड का अंतिम स्वरूप चार पृष्ठ में तैयार किया गया था। जिस में प्रथम पृष्ठ पर प्रस्तुत सभानता मापदंड को भरने के लिए सूचन और दो उदाहरण दिये गये थे। दूसरे पृष्ठ पर आचार्यों की सामान्य जानकारी और उसके बाद डिस्लेक्षीया सभानता ज्ञात करने के लिए 40 विधान एवं प्रत्येक विधान के सामने प्रतिचार देने के लिए "हा" एवं "ना" का विकल्प दिया था।

डिस्लेक्षीया सभानता मापदंड का यथार्थीकरण

शोधकर्ता ने अंतिम स्वरूप के मापदंड के मानकीकरण के लिए विश्वसनीयता एवं मानकीकरण मूल्य ज्ञात किया था। इस लिए अर्धविच्छेदन पद्धति के द्वारा विश्वसनीयता ज्ञात की गई थी। जब की सभानता मापदंड के मानकीकरण मूल्य की जांच के लिए सभानता मापदंड पर पात्रों के प्रथम वक्त के प्राप्तांक एवं कूछ समय बाद प्राप्त प्राप्तांक के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया था। इस प्रकार मापदंड का मानकीकरण मूल्य ज्ञात किया था। मानकीकरण के लिए शोधकर्ता ने सभानता मापदंड के लिए सुरेन्द्रनगर जिल्ले के जिल्ला शिक्षा समिति संचालित प्राथमिक विद्यालयों के 20 आचार्यों को स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श चयन पद्धति से चयन किया था।

डिस्लेक्षीया सभानता मापदंड की विश्वसनीयता

प्रस्तुत शोध के लिए निर्मित सभानता मापदंड की विश्वसनीयता ज्ञात करने के लिए अर्धविच्छेदन पद्धति का आधार लिया गया था। विश्वसनीयता के लिए न्यादर्श के 80 पात्रों के प्रतिचारों में से यादृच्छिक पद्धति से 20 निदर्श के मापदंड के प्रतिचारों का चयन किया गया था। इस के बाद सभानता मापदंड के प्रत्येक विधान के लिए पात्रों के द्वारा प्राप्त के एकी क्रम के प्रतिचार एवं बेकी क्रम के प्रतिचार की गिनती की गई थी। यह गिनती तालिका 2 में है। मानकीकरण के लिए प्रत्यक्ष साक्षात्कार के प्राप्त प्राप्तांको को भी दिया गया है।

तालिका 2

सभानता मापदंड की विश्वसनीयता एवं मानकीकरण के लिए न्यादर्श के सभानता अंक

क्रम	प्राप्तांक		कुल	साक्षात्कार	क्रम	प्राप्तांक		कुल	साक्षात्कार
	एकी	बेकी	प्राप्तांक	प्राप्तांक		एकी	बेकी	प्राप्तांक	प्राप्तांक
1	27	24	51	53	11	24	26	50	51
2	35	35	70	68	12	30	30	60	59
3	32	30	62	63	13	30	29	59	61
4	29	26	55	57	14	30	29	59	60
5	25	25	50	52	15	36	28	64	61
6	33	29	62	58	16	34	29	63	60
7	33	33	66	64	17	30	30	60	62
8	32	29	61	60	18	31	28	59	60
9	29	29	58	57	19	32	29	61	63
10	31	32	63	62	20	29	31	60	64

तालिका 2 में दृश्य प्राप्तांकों की गिनती के आधार पर प्राप्त प्राप्तांकों के अर्धभागों के प्राप्तांकों के मध्य का सहसंबंधाक 0.71 प्राप्त हुआ था। स्पीयरमेन ब्राउन सूत्र के आधार पर मापदंड की विश्वसनियता ज्ञात की गई थी। जिसके लिए उपयोग में लिया गया सूत्र निम्नांकित है।

$$\text{विश्वसनीयता} - \frac{2 \times \text{दो अर्धभागों के मध्य का सहसंबंधांक}}{1 + \text{दो अर्धभागों के मध्य का सहसंबंधांक}}$$

उपर्युक्त सूत्र के आधार पर डिस्लेक्षीया सभानता के मापदंड की विश्वसनीयता 0.83 प्राप्त हुई थी।

मानकीकरण मूल्य

सभानता मापदंड का मानकीकरण मूल्य प्रस्थापित करने के लिए एवं यादृच्छिक विश्वसनीयता प्राप्त करने के लिए न्यादर्श से प्राप्तांक प्राप्त किये गये थे। न्यादर्श के पात्रों के पास से कूछ समय के बाद प्राप्त प्रतिचारों के सदर्भ में जो प्राप्तांक प्राप्त हुए वह तालिका 2 में प्रस्तुत है। इस प्राप्तांकों का न्यादर्श के पास से प्राप्त प्राप्तांकों

के साथ सहसंबंध ज्ञात किया गया था। कूछ समय बाद प्राप्त प्राप्तांक और सभानता मापदंड के प्राप्त प्राप्तांकों पर प्राप्त प्राप्तांक का सहसंबंध 0.91 ज्ञात हुआ था। अतः प्रस्तुत सभानता मापदंड का मानकीकरण मूल्य 0.91 ज्ञात हुआ। इस प्रकार डिस्लेक्षीया सभानता मापदंड का मानकीकरण मूल्य ज्ञात हुआ था। मापदंड की विश्वसनीयता और वैधता प्रस्थापन के परिणाम निम्नांकित तालिका में है। विश्वसनीयता एवं वैधता प्रस्थापन के परिणामों में विश्वसनीयता मानांक Cronbach's Alpha 0.94, Spearman Brown Coefficient 0.89, Guttman Split Half Coeffcient 0.89 और वैधता के मानंकों में Cliffs Consistency Index- 'C' 0.48, मुख्य वैधता सक्षम प्राप्त हुई थी।

उपरोक्त सोपानों के अनुसार यहाँ शोधकर्ता ने डिस्लेक्षीया सभानता मापदंड का निर्माण किया था। इस मापदंड की सहायता से हम प्राथमिक स्तर के विद्यालयों के आचार्यों के माध्यम से छात्रों में दृश्य डिस्लेक्षीया के चिह्नों को ज्ञात कर सकते है। विभिन्न प्रकार के छात्रों पर इस मापदंड के उपयोग से छात्रों को इस मनोविकार से बचाया जा सकता है। इस उपकरण की सहायता से आचार्यों को इस सभानता मापदंड का उपयोग करना भी सीखा सकते है। छात्रों के अधिगम क्षमता का अध्ययन करने के लिए यह मापदंड उपयोगी सिद्ध होगा।

संदर्भसूचि

Bahri., H.(2013). Hindi-Hindi Dictionary. Delhi: Rajpal And Sons

Baria., V. V.,(2015). Childhood and growing up. Anand:

Dangi, S. & Nagle, Y.K. (2016). Development and validation of religious belief system scale, The international journal of Indian psychology, 3(3),92-108.

Desai., H. G & Desai., K. G. (2010). Research Methods and Techniques. Ahmedabad: Uni. Granth Nirman Board.

Dhadhodra., N. K. (2018). Development and validation of religious belief system scale, KCG Journal of education, 20, 1-10

Ersanli, E. & Mameghani, s.s.(2016). Construct Validity and reliability of Tolerance Scale. Journal of Basic and Applied Scientific Research, 491), 85-89.

Jadav., D. M. (2014). Computer Awereness of std 9th Student of Post Basic School of Surendranagar District. M.Ed., Dissertation, Gujarat Vidyapith, Ahmedabad.

Khalid, S. & Mahmood, N. (2013). A measure of students' and teachers' level of tolerance towards religious and social factors, Pakistan journal of social and Clinicl psychology, 11(2), 77-83

http://www.british-dyslexia-association.tel./

http://WWW. dyslexia.com/

http://www.dyslexiaaction.org..uk/

http:/gu.wikipidia.org/title/dyslexia

Kamani., J. (2005). Dyslexia.Rajkot: Pravin Prakashan Pvt. Ltd.

Lala. A., (1982) Child Development and Education. Moscow: Progress publisher

Maniyar., R. (2010). Why We are Teach Child ?. Mumbai: R. R. Sheth's Company.

Parkh., B. U. & Trived., M. D. (2010). Statistics in Education. Ahmedabad: Uni. Granth Nirman Board.

Panchal, D., Desai, T., & Joshi, C., (2020). Psychology. Gandhinagar: Gujarat State Text Book Board.

Sahai., R. N., & Verma., S. K., (2018). Oxford Student's English Hindi Dictionary. New Delhi: Oxford University

Vakani, M. R. (2015). A psychopath of childhood- Dyslexia. Knowledge Consortium of Gujarat, Journal of Education, 07, 01-05.

Zinjuvadia., S. G. (2018). The Awareness of Primary School's Principals About Children in Dyslexia. M.Phil. Dissertation, Gujarat Vidyapith, Ahmedabad.